अध्याय - 4

निराला की 'अपरा' में सांस्कृतिक चेतना

अध्याय - 4

निराला की 'अपरा' में सांस्कृतिक चेतना

मानव की सुसंस्कार-सम्पन्नता ही दूसरे शब्दों में उसकी संस्कृति है। देशकाल और उपलब्ध साधनों के आधार पर विश्व के प्रत्येक खण्ड के मानवों को सुसंस्कार-संपन्न होने के लिए भिन्न-भिन्न मार्ग, माध्यम अथवा उपकरण अपनाने पडे इसीसे विश्व में विभिन्न संस्कृतियों का अपना एक पृथक-पृथक इतिहास है। यही कारण है कि अनेक संस्कृतियाँ भारत में आयी और इस महासमुद्र में विलीन हो गयी। आर्य तथा आर्येतर संस्कृतियों के मिलन से जो संस्कृति आविर्भूत हुयी, वही भारत की बुनियादी संस्कृति बनी। भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही समन्वयवादी रही है।

भूमि एवं भूमिवासी जन के साथ-साथ देशवासियों की चिंतनधारा भी राष्ट्र का आधारभूत तत्व है। इस चिंतनधारा में ही देश की संस्कृति निवास करती है। जगत में आकर सभी प्राणी इस जीवन का उपभोग करते हैं, किन्तु जीवन जहाँ मनुष्यों तथा पशु-पक्षियों का सामान्य धर्म है, वहाँ संस्कृति मनुष्य की ही विशेषता है। व्यक्ति के जीवन का आधार उसके आचार एवं विचार ही हैं और ये आचार-विचार हमें संस्कृति में ही मिलते हैं। मानव-जीवन जिस प्रकार परिवर्तनशील है, उसी प्रकार संस्कृति भी देशकाल के अनुसार परिवर्तित होकर मानव को उसकी उच्चशयता की प्राप्ति में योगदान देती है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान से अधिक पवित्र किसी को नहीं मानती।[1] भारतीय संस्कृति में ज्ञानोपासकों के लिए अत्यंत आदर की भावना है। भारतीय संस्कृति में भय, नाश, मृत्यू आदि है ही नहीं क्योंकि ज्ञान का नाश नहीं होता और ज्ञान के आधार पर ही यह संस्कृति खडी है। भारतीय संस्कृति बुध्दि-प्रधान है।

संस्कृति तथा साहित्य में अविच्छिन्न और अटूट संबंध है। यह संबंध परस्पर एक दूसरे पर आश्रित रहता है। प्रत्येक देश का साहित्य तत्कालीन संस्कृति को अभिव्यक्त करता है तथा प्रत्येक देश की संस्कृति तत्कालीन साहित्य को प्रभावित कर उसे विकसित करती है। अतः साहित्य को संस्कृति की लिखित अभिव्यक्ति माना गया है, जो एक पीढी से दूसरी पिढी को अनायास प्राप्त होती रहती है।[2] साहित्य में मानव जीवन के विविध व्यापारों, क्रिया-कलापों, परंपराओं एवं रीतिरिवाजों आदि को चित्रित किया जाता है, जो देश की संस्कृति को निर्धारित करते हैं।

साहित्य और संस्कृति दोनों का लक्ष्य-जीवन को अधिक सुन्दर और उदात्त बनाना है। जिस देश का साहित्य जितना महान होता है, उस देश की संस्कृति भी उतनी महान होती है। संस्कृति जितनी विकसित होगी भाषा और साहित्य भी उतना ही समृध्द होगा। साहित्य देश की संस्कृति के अतीत का इतिहास प्रस्तुत करता हैं, वर्तमान का विवेचन करता है तथा भविष्य का मार्ग उज्ज्वल और प्रशस्त करता है। साहित्य हमारी रागात्मिका वृत्ति का संस्कार और सम्प्रसार करता है और इस प्रकार सांस्कृतिक उद्देश्य की सम्पूर्ति करता है।

हमें निरालाजी को "अपरा" में सांस्कृतिक चेतना को देखना हैं। प्रत्येक श्रेष्ठ कलाकार संस्कृति का वक्ता, उसकी विशेष धारा का प्रतिनिधि होता है। हमें निरालाजी के काव्य को भारत के सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में देखना है।

निरालाजी के दिमाग में भारत की परिकल्पना केवल एक भौगोलिक सीमा के रूप में ही नहीं है। भारत आपके लिए मुख्यतः एक सांस्कृतिक इकाई है। शुध्द संस्कृति की धारणा बार-बार निरालाजी की कविताओं में झंकृत होती है। निरालाजी के निर्माण में बंगाल के नवीन जागरण और स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का प्रभाव भी मालूम होता है। वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द की मेघमन्द्र वाणी में भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का उदय हुआ था।[3]

निरालाजी के समय सांस्कृतिक जागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन का युग था और छायावादी साहित्य भी उसी का एक रूप है। निरालाजी के संपन्न और

सांस्कृतिक मानस से निष्पन्न होकर प्रत्येक रचना सीधी काल की गोद में गिरती रही है। निरालाजी भारतीय संस्कृति को मूलतः हिंदू संस्कृति ही मानते हैं, यद्यपि इसकी प्रवृत्ति समन्वयात्मक रही है।[4] निरालाजी की कविताओं का स्वर राष्ट्रीयता का भी माना जाता है।

निरालाजी ने अपनी "अपरा" में भारतीय संस्कृति का अनेक रूपों में वर्णन किया है। निरालाजी ने भारतीय संस्कृति को अपने काव्य में स्थान दिया है। निरालाजी के संस्कृति का रूप हमें अनेक कविताओं में दिखाई देता है। निरालाजी की "अपरा" में सांस्कृतिक चेतना के दर्शन निम्नलिखित बातों से देखे जा सकते हैं -

1. भौतिक आवश्यकताओं का वर्णन।
2. अतीत संस्कृति का वर्णन।
3. वर्तमान संस्कृति की दुर्दशा।
4. व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन का वर्णन।
5. अध्यात्मिकता।
6. दार्शनिकता।
7. मानवता।

4.1 भौतिक आवश्यकताओं का वर्णन :-

आधुनिक मानव रहन-सहन के स्तर को उन्नत करनेवाली अनेक भौतिक उपलब्धियों का स्वामी है। रहन-सहन की भौतिक आवश्यकताओं को सुगमतापूर्वक पूरा करने के उद्देश्य से निरन्तर नवीन साधनों का खोज मानव करता रहा है। आदिकाल से मानव अपनी भौतिक आवश्यकताओं को आज तक पूरा करता रहा है। आदिकाल से लेकर आज तक उसकी भौतिक आवश्यकताओं में परिवर्तन होता गया है। भोजन, वस्त्र, आभूषण, आवास, मनोरंजन और सुरक्षा मानव की मूल भौतिक आवश्यकताएँ हैं।

मानव अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जितना ही अधिक संघर्ष करता रहता है उतनी ही उसकी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ बढती चली जाती हैं। आधुनिक काल में मानव अधिक सुखों के पीछे भागता है और दुःख का सामना करता है। भारतीय संस्कृति में अध्यात्मिकता का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। मानव इस दुःख को दूर करने के लिए अध्यात्मिकता का सहारा लेता है। जिसके कारण मानव को मन का सुख प्राप्त होता है। निरालाजी ने भौतिक आवश्यकताओं का वर्णन अपनी अनेक कविताओं में किया है।

4·1·1 भोजन :-

प्रत्येक देश एवं जाति की भोजन-व्यवस्था एवं खान-पान संबंधी नियम उस देश और जाति के विकास के परिचायक होते हैं। निरालाजी ने अपने काव्य में विविध खाद्य एवं पेय पदार्थों की ओर संकेत किया है। प्राचीन काल से शाकाहार और मांसाहार जैसे भोजन मानव करता आया है। मानव की बुध्दि ने मांसाहार भोजन का तिरस्कार कर शाकाहार भोजन का महत्व प्राप्त किया। शाकाहार संबंधी भोजन में आधुनिक युग के समान प्राचीन काल में भी चावल का विशेष स्थान था। निरालाजी ने अपनी कविताओं में शाकाहार भोजन का ज्यादा वर्णन किया है। पकौडी, कचौडी, चूडा, गुडौदन और पुए आदि प्रकार के पदार्थों का उल्लेख मिलता है। ग्रामीण जनता में पुए का महत्वपूर्ण स्थान है। गेहू के चूर्ण, गुड और जल को घोल बनाकर तवे पर परोठे की तरह सेंके जाने वाले पुए शाकाहार भोजन में महत्वपूर्ण हैं।

व्रत और त्योहारों पर खीर और पुए बनाने की एक दीर्घ परंपरा हमारे भारतीय जनता में हैं। निरालाजी ने "दान" कविता में भी पुए का वर्णन किया है। मानव को बंदर को खिलाने के लिए तो पुए हैं परंतु किसी भूखे भिकारी को देने के लिए उसके पास पुए नहीं हैं।[5] यहाँ निरालाजी ने भारतीय जीवन पर भोजन के माध्यम से कडा व्यंग्य किया हैं। निरालाजी ने देवी सरस्वती को महत्वपूर्ण बनाने के लिए भारतीय किसानों के खेत से निकलने वाले फसलों के माध्यम से

वर्णन किया है। कवि कहता हैं कि, हे देवी, तुम महर. के सुगंधि पुष्प रूपी धन से लुटी हुई हो और तुमने सरसों के पीले पुष्पों की साडी पहनी हैं; जिसमें आरसी के नीले फूलों की रेखाएँ खींची हुई दिखाई देती हैं।[6]

भारतीय किसान अपनी खेती में अनेक प्रकार की फसल लेता है। किसान फसल को अपने खेत में देखकर बहुत खुश होता हैं। किसान खेत में चने, जौं, महर, गेहूँ, अलसी, राई और सरसों के बीज बोते हैं। उन बोए हुए बीजों को देखकर किसान खुश होता है।[7]

निरालाजीने आम का वर्णन अपनी कविता में किया है। कवि कहते हैं कि जब किसान अपनी खेत की रखवाली करता हुआ आम के पेड के नीचे आम की सुगंधि लेते हुए नवीन वर्ष का अनुभव कर रहा है और चांदनी सुहावनी लग रही हैं। निरालाजी ने अपने दुःखी जीवन के माध्यम से आम की सुखी डाल का वर्णन किया हैं। कवि कहते हैं, आम की सुखी डाल जो तुम्हारे सामने दिखाई देती हैं उस डाली के ऊपर अब कोयल या मोर बैठने के लिए नहीं आते, अतः मैं उस पंक्ति की तरह हूँ जो पंक्ति लिखी हैं उसका कोई अर्थ नहीं है।[9] इस प्रकार निरालाजी ने आम के माध्यम से भारतीय किसान और अपने दुःख पूर्ण जीवन का वर्णन किया हैं। निरालाजी ने जामुन[10] और अंगुरों[11] का भी आलंकारिक रूप में वर्णन किया हैं। अरहर, काकुन, सावों, उडद और कोदों की खेती लहराती हुई देखकर कवि को खुशी होती हैं।[12]

निरालाजी ने भोजन की शुध्दता पर भी बल दिया है। हमारे समाज में भिक्षुक जाति की ज्यादा अवहेलना की जाती हैं। भिक्षुक जीवन का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि, भिक्षुक जब जूठे पत्तलों को चाटकर अपनी भूख मिटाना चाहता हैं, तब उसे देखकर किसी अन्य व्यक्ति को उसकी दया नहीं आती।[13] और भारतीय समाज में अनेक लोग भूख के लिए अपने ही भाई का खून करते हैं।[14] भारतीय जातिपर भी निरालाजी ने भोजन के माध्यम से कडा व्यंग्य किया है। निरालाजी का कहना हैं कि अनेक जातियाँ ऐसी होती हैं, जिस पत्तल में खाते हैं उसी में छेद

करती हैं।[15] इस प्रकार निरालाजी ने भोजन के माध्यम से भारतीय मनुष्य और जातिपर कडा व्यंग्य किया है।

4·1·2 वस्त्र :-

भारतीय संस्कृति के अनुसार सदा से ही वस्त्र व्यक्ति का एक प्रधान अंग रहा है। जीवन में वस्त्रों की उपयोगिता स्पष्ट हैं। निरालाजी ने भी अनेक कविताओंमें विविध वस्त्रों का वर्णन किया हैं। निरालाजी ने ओढनी का वर्णन किया हैं। निरालाजी ने "यमुना के प्रति" कविता में प्रियतमा के साथ रहते-रहते अचानक नायिका का घूंघट माथे से गिरता हैं और वह लज्जित हो जाती हैं।[16]

निरालाजी स्त्रियों के महत्वपूर्ण वस्त्रों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि,, नायिका का आँचल अब काला दिखाई दे रहा है।[17] कवि प्रकृति के माध्यम से कहते हैं कि, धरती का आँचल अब सोने के समान दिखानेवाले फसलों से लहराता हुआ दिखाई देता है।[18] निरालाजी ने भारतमाता के माध्यम से भी आँचल का वर्णन किया हैं, भारतमाता के आँचल में वृक्ष, तिनके या घास और वन की लताएँ सभी उनके वस्त्र हैं और धरती के फूल उनके आँचल में लगे हुए सितारे दिखाई देते हैं।[19]

भारतीय स्त्रियाँ अपनी लज्जा रक्षण के लिए दुकूल पहनती हैं। दुकूल वस्त्र सफेल रेशमी होता हैं। स्त्रियाँ यह वस्त्र शरीर के निम्न भाग पर पहनती हैं। प्रियसी को अपना दुकूल प्रकाशपूर्ण दिखाई देता हैं।[20] निरालाजी मानते हैं कि वस्त्र व्यक्ति के लिए होते हैं, वस्त्र के लिए व्यक्ति नहीं होता। महाराजा शिवाजी द्वारा जयसिंह को महत्वपूर्ण सन्देश दिया हैं कि, तुम अपने वस्त्रों को जरा देखो और बताओं कि उन वस्त्रों पर लगा हुआ खून किसका है ? क्या तुम अपने विजय के बाद इसे अपनी लगी लालिमा कह सकते हो ?[21]

4·1·3 आवास :-

जीवन रक्षा के लिए भोजन एवं वस्त्र के समान ही गृहों का होना भी महत्वपूर्ण है। निरालाजी मानव से कहते हैं कि, तुम्हारे मार्ग में काँटे, कीचड, निष्ठूर हिंसक राक्षस, पर्वत और गुफा आती है।[22] प्राचीन काल से ही मानव गुफाओं का आवास के लिए उपयोग करता आया है। आधुनिक काल में मानव ने अनेक प्रकार के आवास निर्माण किये हैं। "तोडती पत्थर" में नायिका के सामने वृक्षों की कतार और ऊँची हवेली और महल हैं।[23] कवि के मन में उन हवेलियों के प्रति भय का वातावरण भी निर्माण होता है।[24] भारतीय संस्कृति में भवन का महत्वपूर्ण स्थान है। श्याम के समय प्रियतमा भवन में दीप जलाने की व्यवस्था कर रही है।[25] इस प्रकार निरालाजी ने आवास का महत्वपूर्ण वर्णन किया है।

4·1·4 आभूषण :-

भारतीय संस्कृति में आभूषणों का भी अत्याधिक महत्व हैं। आभूषण शरीर की सुन्दरता को बढाने वाले उपकरण हैं। निरालाजी ने अनेक कविताओं में आभूषणों का वर्णन किया है।

निरालाजी भारत माता का वर्णन करते हुए कहते हैं भारत माता के सीर पर हिमालय जैसा सुन्दर मुकुट है।[26] नायिका की नूपुर की ध्वनिसे नायक के मन में मादक स्थिति निर्माण होती हैं।[27] कवि कहता हैं कि उनके गले में पडे हारों के मोती किन तारों में छिपे दिखाई देते हैं? और अब किन चरणों में नूपुर की ध्वनि बज रही है।[28] निरालाजी आत्मा और परमात्मा के माध्यम से आभूषण का वर्णन करते हैं तुम प्रेममयी परमात्मा के गले का हार हो और मैं काली नागिनी के समान उसकी वेणी हूँ।[29] निरालाजी ने आत्मा के रूप में वर्णन किया है, मैं बोलनेवाले नूपुर की आवाज हूँ।[30] निरालाजी कहते हैं, भारत माता ने गले में गंगा जल से बना हुआ हार पहना हैं।[31] निरालाजी कहते हैं जब तक हमारे पैर स्वतंत्र नहीं होते तब तक नूपुरों के सुर भी मन्द ही रहेंगे।[32] निरालाजी आभूषणों को मानव जीवना में महत्वपूर्ण मानते हैं।

4·1·5 मनोरंजन :-

जीवन में सरसता एवं उत्साह के संचार के लिए मनोरंजन अत्याधिक महत्वपूर्ण है। आधुनिक युग के समान प्राचीन काल में भी भारतवर्ष में मनोरंजन के अनेक साधन थे। प्राचीन काल से भजन गाने की पध्दति हमें मालूम है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण त्यौहार दशहरे और दीपावली आने से लोग कबीर और तुलसीदास के भजन गाते रहते हैं और राम के वनवास का वर्णन करते रहते हैं।[33] कवि नारी के माध्यम से कहते हैं, बारहमासी, सावन और कजलियाँ गाती हुई स्त्रियाँ अपने खेत में चली जाती हैं।[34]

निरालाजी ने विविध प्रकार के वाद्य-यंत्रों की ओर भी संकेत किया है। कवि कहते हैं, किसान खेत के पास ढोलक और मंजीरे लेकर गाना गाते हैं।[35] कवि आगे कहता है, मृदंग के सुन्दर स्वरों के क्रिया कलापों में ऊँची लहरों की भंगिमा आ सकती है।[36] निरालाजी प्रियतम को आवेदन करते हैं कि, तुम अपना सितारा सँवार लो। जिससे तुम फिर से ठाट बाँधकर अपनी गोद में झंकार दो।[37]

4·1·6 शस्त्रास्त्र :-

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में शस्त्रों का प्रयोग अपनी रक्षा करने हेतु किया जाता है। आधुनिक काल में तो शस्त्रों का पूरा उपयोग ही बदल गया है। निरालाजी ने भी अपनी अनेक कविताओं में शस्त्रों का उल्लेख किया है। निरालाजी मानते हैं कि शस्त्रों का प्रयोग मानव जाति के कल्याण के लिए होना चाहिए। अगर इसका प्रयोग मानव जाति को नष्ट करने के लिए किया गया तो मानव सृष्टि कुछ ही काल में नष्ट हो जायेगी।

निरालाजी ने महाराजा शिवाजी के द्वारा कहा है कि जब भी मेरी तलवार म्यान से निकलती है तो मैं धर्मघातकों को ही युध्दभूमि में अपनी तलवार का निशाना बनाता हूँ।[38] कविने रामे के बाणों को महत्वूपर्ण माना है। राम के बाण संपूर्ण संसार को जीतने की सामर्थ्य रखते हैं, इन बाणों की तेज के समूह के कारण संपूर्ण सृष्टि की रक्षा का विचार विद्यमान है। राम कहते हैं कि, मेरे बाणों में इतनी

प्रबल शक्ति है कि पापों का विनाश करनेवाली संस्कृति की अपार भावना है।[39]

निरालाजी आगे कहते हैं, युध्द भूमि में जवान महत्वपूर्ण है। अगर जवान डरपोक न हो तो युध्द की विजय निश्चित हो जाती है। अगर जवान निडर हो तो युध्द की विजय लाने के लिए उसे उसके प्राणों की बलि देनी पडती है और युध्द में जब तक योध्दा के पास तरकस बाण और कमर में तलवार होती है तब तक योध्दा अपने भाग्य को छोडता नहीं।[40] महाराजा शिवाजी राजा जयसिंह को अपनी तलवार तपाकर युध्दभूमि में आने के लिए कहते है और बताते हैं कि उसी तलवार से दुःखी समाज का दुःख दूर करो और जन्मभूमि सुखी बनाने का प्रयत्न करो।[41]

निरालाजी मानते हैं कि युध्दभूमि में [illegible] मानव जाति का विनाश कितना दुःख पूर्ण होता है। युध्दभूमि में अनेक शस्त्रों का प्रयोग कर मानव जाति का विनाश करने के प्रयत्न किये जाते हैं।झररर--झरर की आवाज करती हुई भेरी बज रही है और नक्कारों की आवाज सारे युध्दभूमि में गूँज रही है। कड़-कड़ और सन्-सन् करके बन्दुकें तथा अररर-अरर करके तोप चल रही है।[42] यहाँ निरालाजी ने युध्दभूमि में [illegible] युध्द का चित्र स्पष्ट किया है।

इस प्रकार निरालाजी ने अनेक कविताओं में भौतिक आवश्यकताओं का वर्णन किया है।

4·2 अतीत संस्कृति का वर्णन :-

भारत की संस्कृति तथा सभ्यता प्राचीन है। भारत के गौरवशाली अतीत के प्रति निरालाजी निरंतन नतमस्तक रहे हैं। निरालाजी ने "यमुना के प्रति", "खण्डहर के प्रति", "तुलसीदास", "सहस्त्राब्दि", "देवी सरस्वती", "भगवान बुध्द के प्रति" आदि कविताओं में भारत की अतीत संस्कृति का वर्णन किया है।

निरालाजी की "यमुना के प्रति" कविता अतीत-संस्कृति का वर्णन करने में महत्वपूर्ण है। "यमुना के प्रति" में कवि ने राधा-कृष्ण और गोपी प्रेम की पौराणिक गाथाकी भूमिका पर मध्ययुग की प्रेम साधना की कहानी है। यमुना भारत की संस्कृति

साधना में कुतुहल, प्रेम, सौंदर्य, विरह और भावोन्माद की क्रीडा स्थली है। इस कविता में कवि अतीत की क्रीडा में वंसीबट, नटनागर, श्याम, चल-चरणों का व्याकूल पनघट और वृन्दावन धाम आदि खोजना चाहते हैं।[43] निरालाजी यमुना से पूछना चाहते हैं कि, हे यमुना इस मुक्त हृदय के सिंहासन पर प्राचीन युग से कौन-कौन से सम्राटों की गाथाएँ लिखी हैं जो इन प्राचीन सम्राटों के मस्तकपर सूर्य, चंद्र, तारे चमक रहे हैं।[44]

निरालाजी को इस कविता में कृष्ण और गोपियों की प्रेम लीला की याद आती हैं। भारत वर्ष की संपूर्ण माधुर्य साधना यमुना के करील कुंजों में राधा-कृष्ण की रहस केलि और रास में मुखरित हुई है। कवि ने प्राचीन काल के शृंगार का रसपूर्ण केलि क्रिडा का भी वर्णन किया है। राधा के पास कृष्ण आने से राधा की श्वासों का एकदम कम्पन होने लगता है और चारों ओर सुगंधित हवा चलने लगती हैं। और इसी बीच श्वासों की गति तीव्र होकर वृक्ष स्थल स्तंभित रह जाता हैं और पैर लडखाने लगते हैं, उसी समय दीपक बुझ जाता है। केलि क्रिडा का आरंभ करने के बाद न जाने कितने गुप्त रहस्यों को खोला जाता है और न जाने इसके लिए कितना परिश्रम किया जाता है। जब केलि क्रिडा समाप्त होती है तब नायिका को बाहय ज्ञान होता है कि वस्त्रों को इधर-उधर बिखरे और नग्न शरीर को देखकर उनका सौंदर्य विकसित होकर उनका अभिमान व्यथित हो जाता है।[45]

निरालाजी यमुना से पूँछते हैं कि तुम्हारे किनारे पर होने वाले विरह और मिलन के अतीत के गान तू भी गाती है।[46] "यमुना के प्रति" रचना निरालाजी की श्रेष्ठतम् प्रतिभा का प्रतीक है। निरालाजी ने यमुना को हमारी सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक माना है।

"खण्डहर के प्रति" कविता में कवि की सांस्कृतिक भावधारा का परिचय प्राप्त होता हैं। अद्‌भुत, अज्ञान पुरातन का शृंगार धारण कर खडा खण्डहर नर-नारियों के भाव-बन्धन ढीले करता है। निरालाजी कहते हैं कि, हें खण्डहर आज भी खडे हो जो अद्‌भुत अतीत स्मृतियों की सुन्दरता को लेकर और आज भी तुम्हारा

अद्भुत वैभव प्राचीन काल से सुन्दर है।[47] कवि कहते हैं कि खण्डहर ने आर्त भारत को सचेत करते हुए अपने को जैमिनी, पंनजलि, व्यास आदि ऋषियों और राम-कृष्ण भीमार्जुन, भीष्म नर देवों का अपने को जनक बताया है।[48] खण्डहर एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। खण्डहर भारतीयों को उनके विस्मृत गौरव की याद दिलाकर जागृति की प्रेरणा देता है।

निरालाजी ने "तुलसीदास" कविता में पौराणिक संस्कृति तुलसीदास के माध्यम से चित्रित की है। राम के प्रति मन में श्रध्दा निर्माण करने की प्रेरणा उनको अपनी पत्नी से मिली थी। जिसे राम का महत्व भारतीय जनता को प्राप्त हुआ। "सहस्त्राब्दि" कविता में निरालाजी ने विक्रमीय 1000 संवत् तक का इतिहास काव्य बध्द किया है। कवि कहते हैं कि विक्रम संवत् के एक हजार वर्ष तक अनेक घटनाएँ हुई जिनके प्रभाव से सारा आकाश गुंजित हो गया। कवि भारत के अतीत का वर्णन करते हुए कहते हैं, मुझे आज महावीर विक्रमादित्य से स्वागत की घटना याद आ रही है। उनके रथ का स्वागत अनेक युवतियों ने हाथों में पुष्प लेकर किया है।[49]

कवि कहते हैं भारत के चारो ओर मठों की स्थापना की है। बौध्द धर्म के पतन और शंकराचार्य के शिष्यों का तुषाराग्नि में जलकर पराजय की घटना मुझे याद आती है। कवि ने रामानुज की विचारधारा का वर्णन कविता में किया है। जिससे भारतीय समाज को भारत के अतीत संस्कृति का महत्व पता चल सके। भारतीय संस्कृति में भारतवासी प्राचीन काल से ही एकजूट होकर नहीं रहे हैं। जिससे आक्रमण भारत पर होता आया है। कवि कहते हैं भारत के वर्णाश्रम थे वे अब टूट गये हैं, जो पहले से एकत्रित थे वे लोग अब विभक्त हो गये हैं और राजा दाहिर भी हार गये हैं। जिससे हमारी कुमारी कन्याएँ परकीय लोगों की गुलाम बन कर रह गयी हैं।[50] कवि ने कविता के अंत में मानव को सुख शांति प्राप्त होने का संदेश दिया है।

"देवी सरस्वती" कविता में निरालाजी ने देवी सरस्वती माता का वर्णन भारतीय किसान के माध्यम से चित्रित किया है। निरालाजी देवी सरस्वती से कहते हैं कि, तुम्हें प्राचीन काल से आर्य महत्वपूर्ण मानते आये हैं। देवी को आपने सामवेद के समान मानकर देवी को ज्ञान रूपी धन माना है।[51] कवि ने देवी सरस्वती का वर्णन किया हैं कि, देवी ने अपने दोनों हाथों में वीणा थाम ली है और अन्य हाथों में पुस्तक और कमल है।[52] कवि कहते हैं देवी तुम भारत की प्रांतीय सभ्यता का आलेख हो और राजनीति के जीवन का आकर्षण केंद्र हो।[53]

निरालाजी ने ग्रामीण जीवन से सहानुभूति व्यक्त करते हुए देवी सरस्वती को भारतीय ग्रामवासिनी माना है। कवि ने इस कविता में भारतीय ग्रामों का सालभर का जीवन चित्रित किया है। इस कविता में ऋतुओं का भी वर्णन है जो भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। कवि ने रामायण, महाभारत का उल्लेख भी किया है। भारत के साहित्यिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण व्यक्ति तुलसीदास, कबीर, दादू आदि का भी वर्णन किया है।

निरालाजी "भगवान बुध्द के प्रति" कविता में प्राचीन काल में अपने बंधुओं के बुध्दि का वर्णन करते हैं। कवि कहते हैं, हमारे प्राचीन बंधु साद, शिक्षा से रहित और जंगली थे तथा प्राचीन बंधु भूतकाल में आज की भौतिक सुखों की भाँति मनुष्य उन्मुक्त प्राणवाला न थे।[54] बुध्द के विचार सैकडों देशों में जाने से मानवता का विचार प्रसारित हो गया। भगवान बुध्द द्वारा संपूर्ण विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैल गया है और वह प्रकाश आज भी ज्योति के रूप में प्रदर्शित हो रहा है।[55]

"छत्रपति शिवाजी का पत्र" कविता में निरालाजी ने मुसलमानों के भारत पर हुए आक्रमण का वर्णन किया है। प्राचीन काल से हम गुलाम रहे पर अब हमें स्वतंत्र होकर एक नया जीवन जीना है। महाराजा शिवाजी राजा जयसिंह से कहते हैं भारत को स्वतंत्र करो। शिवाजी महाराजा की ललकार के द्वारा भारतवासियों को अंग्रेजों के विरूध्द उठ खडे होने के लिए कवि ने कहा है कि हमारे समाज में जितने विचार हमारे सामने हैं वे सब अंग्रेज और मुसलमान लोगों

के सुख और भोग-विलास के विचार हैं और ये विचार चिरकाल में नष्ट होने वाले है। हमारा हिंदुस्तान अब मुक्त होगा इस घोर अपमान से और इस सुख, भोग विलास की दासता से ये पाप कट जाएँगे।[56]

निरालाजी ने भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार पध्दति का वर्णन किया है। भारतीय समाज में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ बंधा हुआ चलता है। हर परिवार जिन सीमाओं में बंधा हुआ होता है वे वेश, भाषा और धर्म और ऐसे परिवार में द्वेष नहीं होता है। और माना जाता है कि यह सारा संसार ही हिंदुओं के लिए है।[57]

इस प्रकार निरालाजी ने अपनी अनेक कविताओं में संस्कृति का अतीत कालीन विवेचन किया है। निरालाजी अतीत संस्कृति को महत्वपूर्ण मानते हैं।

4·3 वर्तमान संस्कृति की दुर्दशा :-

भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य संस्कृति की ओर ले जाने का काम अंग्रेजी शासन काल से शुरू हुआ और वह आज तक चलता आया है। अंग्रेजी शासन काल से भारतीय संस्कृति की दुर्दशा शुरू हुई थी। भारतीय संस्कृति के जडमूल पर कुठराघात करके अंग्रेज शासन ने उसे अपंग बनाने की चेष्टा की है। संस्कृति का -ह्रास जन जीवन की गरिमा को नष्ट कर देता है। संसार के इतिहास में हुए दो महायुध्द से संसार की मानवता नश्वर हो गई है। आज का युग विज्ञान युग माना जाता है। विज्ञान के ज्ञान बोध ने आज की संस्कृति को जड एवं जीवनशून्य कर दिया है।

निरालाजी कहते हैं युध्द से किसी मानव समाज का भला नहीं होता तो फिर क्यों दो राष्ट्र आपस में लडते रहते हैं ? इस लडने में किसी-न-किसी बात का हेतु होता है।[58] निरालाजी को आज मानव की संस्कृति सिर्फ आधुनिक सुख के पीछे भागने वाली दिखाई देती है। पैसा कमाना एक महत्वपूर्ण बात मानव में दिखाई देती है।[59]

निरालाजी ने पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर देखा है। परंतु निरालाजी कहते हैं, भारतवासी लोगों को यह मालूम होना चाहिए पश्चिमी संस्कृति से हमें प्रभावित नहीं होना चाहिए। क्योंकि पश्चिमी संस्कृति ही भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण देन गीता से प्रभावित है। और हमें भी गीता का बार-बार स्मरण करना चाहिए।[60]

निरालाजी प्राचीन काल की मुगलों की कुटनीतिसे परेशान थे। हिंदु-हिंदु राजा को आपस में लडवाते थे और अपना लक्ष्य साध्य करने थे। इसलिए निरालाजी कहते हैं, यह निस्संदेह सत्य हैं कि हिंदुओं में एक भी बलवान राजा नहीं रहा है। अब हमारी ताकद लुप्त हो गई है और तुर्कों की ताकद बढ गयी है तथा वह हमारे ऊपर राज्य करने लगी है।[61]

निरालाजी भारतीय संस्कृति की दुर्दशा पर नव प्रभात की आकांक्षा व्यक्त करते हैं। आप कहते हैं, हे भारतवासियों अब तुम जागो, तुम्हारे पास अब नयी प्रभात आयी है। अब अंधकार रात्र बीत गई हैं और पूर्व दिशा की ओर नये रूप में ज्योतिर्मय सूर्य उदय हुआ हैं, तुम उसका स्वागत करो।[62] निरालाजी भी नव संस्कृति का स्वप्न देखते हैं। निरालाजी की नव संस्कृति साम्यवाद से प्रभावित हैं। निरालाजी नव संस्कृति में समता, शिक्षा का प्रसार और मानव में राष्ट्रीय भावना निर्माण करना महत्वपूर्ण बातें हैं। सांस्कृतिक जागरण की चेतना का जितना काव्याभिव्यंजन निरालाजी ने किया है उतना सम्भवतः प्रसाद के अपवाद सहित किसी ने नहीं।[63]

4·4 व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन का वर्णन :-

4·4·1 व्यक्तिगत जीवन :-

व्यक्ति समाज का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। व्यक्ति से ही समाज का निर्माण होता है। व्यक्ति समाज में रहकर समाज की पध्दति को अपनाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन विशिष्ठ ढंग से बिताता है। व्यक्ति का समाज से अनेक तरह से संबंध रहता है। व्यक्ति का अपना कुछ प्रभाव होता है और वह प्रभाव समाज पर भी दिखाई देता हैं।

निरालाजी व्यक्ति को समाज का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। निरालाजी मानते हैं कि समाज की अच्छी कृतियाँ और बुरी कृतियाँ इसके लिए व्यक्ति ही जिम्मेदार है। मानव-मानव समाज में एक साथ रहने के लिए तैयार नहीं है। निरालाजी ने "दान" कविता में इसी मानव-मानव का संबंध व्यक्त किया है। उच्चतर व्यक्ति समाज के निम्न व्यक्ति को अभी-भी अपने पास आने नहीं देते। निरालाजी ने समाज के व्यक्तिगत जीवन पर कडा व्यंग्य किया है। जो व्यक्ति प्रतिदिन स्नान, रामायण का पारायण, श्रीमन्नारायण का जाप और बारह मास शिव-पूजा करता है वही मानव भिक्षुक को पुए दान करने के बजाय वानरों को रोज पुए खिलाता है और क्षीण भिक्षुक की तरफ वह मुडकर भी नहीं देखता। वह भिक्षुक को दान नहीं करता है और कवि को यह बुरा लगता है और कवि खुद कहते हैं, "धन्य, श्रेष्ठ मानव।"[64]

निरालाजी भारत की लम्बी पराधीनता के लिए मानव के व्यक्तिगत स्वार्थ को जिम्मेदार मानते हैं। व्यक्ति अपने ही भाईयों का खून कर अपना ही घर भरते हैं। यह बात निरालाजी को दु:खपूर्ण लगती है। निरालाजी आगे कहते हैं, जो व्यक्ति अपने ही भाईयों को लूटता है वह स्वप्न देखनेवाले भिखारी की तरह सुख की छाया में रहता है।[65]

निरालाजी आगे कहते हैं व्यक्ति का स्वार्थ हमेशा अंधा बनकर समाज में रहता है और वह अपने स्वार्थ के लिए उचित-अनुचित मार्ग का प्रयोग करने में मग्न रहता है जो मार्ग परहित से कोसों दूर रहता है।[66] निरालाजी कहते हैं कि, व्यक्तिगत स्वार्थ ने ही हमारी शक्ति छिन ली है और हमारे देश में मुसलमानों का राज्य आया। व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए समाज में भेदभाव निर्माण कर हमारी शक्ति को समाप्त करता है और पारस्परिक वैमनस्य पर खींचातानी करता है और इसी में देश की हानि होती है।[67]

मानव साधना से मुक्त हो सकता है। निरालाजी मानते हैं कि व्यक्ति को समाज में रहकर समाज का भला करना चाहिए। तथा व्यक्ति को आवाहन करते

हैं कि, तुम अपने भाईयों से आ मिलो और देश की स्वतंत्रता के लिए उन अत्याचारियों से युध्द करो जिससे भारत का दुःख दर्द दूर हो जाय।[68] कवि कहते हैं, हम हिंदु आपस में लड-लडकर अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं। अब हमें आपस में लडना नहीं चाहिए। हमें अपनी शक्ति का उपयोग शत्रुसे लडने के लिए करना चाहिए।[69]

निरालाजी व्यक्ति को समाज में सुखपूर्ण रहने का संदेश देते हुए कहते हैं, तुम अब सागर की लहरों के समान समाज में बहते रहो और अपने गीत समाज में जोर-जोर से गाओ। समाज में व्यक्ति को रहना है तो आँसू पीकर रहना चाहिए और अपने देह का बलिदान समाज के लिए करना चाहिए और व्यक्ति को अपनी जान हथेली पर रखकर समाज में रहना चाहिए।[70]

4·4·2 पारिवारिक जीवन :-

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की महत्वपूर्ण इकाई परिवार है। सामाजिक जीवन का प्रारंभ परिवार से ही होता है। भारतीय परिवार में पति, पत्नी तथा पुत्र और पुत्रियाँ रहती हैं। निरालाजी ने "तुलसीदास" कविता में पारिवारिक जीवन का वर्णन किया है। पत्नी की फटकार से पति के आचरण बदल जाना यह पारिवारिक घटना "तुलसीदास" में महत्वपूर्ण है। रत्नावली के फटकारने से तुलसीदास के ज्ञान क्षेत्र खुल जाते हैं। रत्नावली के फटकारने से तुलसीदास पारिवारिक भौतिकता से ऊपर उठकर आध्यात्मिक ऊँचाई पकड लेते हैं।

परिवार में प्रेमपूर्ण संबंध महत्वपूर्ण हैं। निरालाजी कहते हैं, एक आकर्षण में बंधा हुआ एक छोटासा परिवार होता है जो एक साथ संबंध बनाया रखता है। उस परिवार की सीमा इतनी अगाध प्रेम में बंधी है कि धर्म, भाषा और वेश में कोई भेदभाव दिखाई नहीं देता।[71] निरालाजी पारिवारिक जीवन को समाज में महत्वपूर्ण मानते हैं।

4·4·3 सामाजिक जीवन :-

संस्कृति का अस्तित्व समाज में होता है। सामाजिक आचार-विचार संस्कृति के अध्ययन में निश्चित रूप से सहायक होते हैं। समाज में सामाजिक-जीवन चलाने के लिए कुछ संयोजन किया जाता है। वर्ण-व्यवस्था, अर्थ-व्यवस्था इसमें सामाजिक जीवन वर्णित होता है।

निरालाजीने अपनी अनेक कविताओं में वर्ण-व्यवस्था को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वर्ण व्यवस्था भारतीय संस्कृति की सबसे अधिक महत्वपूर्ण सामाजिक व्यवस्था हैं। निरालाजी मानते हैं, भारत में अंग्रेजी शासन काल आने से भारत की वर्ण-व्यवस्था में दरार आयी है। निरालाजी कहते हैं, भारत में स्थित वर्ण व्यवस्था की धार्मिक व्यवस्था टूट गयी है और जो लोग एकत्र थे वे आज विषम रूप से अपना जीवन-यापन कर रहे हैं।[72]

निरालाजी भारत की अनेक जातियों पर कडा व्यंग्य प्रकट करते हैं। "सरोज स्मृति" कविता में कान्यकुब्ज जातिपर कडा व्यंग्य किया है। कवि अपनी पुत्री के विवाह की समस्या को लेकर परेशान रहते थे। आप को लगता है कि मेरी पुत्री का विवाह कान्यकुब्जा ब्राहमण परिवार में हो जाय तो यह परिवार एक-न-एक दिन अपने ही कुल को आग लगायेगा। कान्यकुब्जा ब्राहमण जिस पत्तल में खाते हैं उसी में छेद करते हैं।[73]

निरालाजी खुद को समाज से दूर मानते हैं। कवि कहते हैं, हिंदी साहित्य में मेरा वही स्थान है जो ब्राहमण समाज में अछूत का होता है। मैं तो साहित्य के पीछे की शोभा हूँ।[74] निरालाजी पराधीन समाज को स्वतंत्र करने में प्रयत्नशील हैं। महाराजा शिवाजी राजा जयसिंह से पत्र में कहते हैं, अगर सब हिन्दु एक ओर हो और दूसरी ओर मुसलमान हो तो अपने देश में जातिगत खींचाव होगा तो मुसलमान हमारे देश में पैर भी रख नहीं सकेंगे ऐसा परिणाम देखा जा सकता हैं।[75] निरालाजी स्पष्ट रूप से जातिवाद का खण्डन करते हैं।

देश की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में दो वर्गो का निर्माण हुआ है, पूंजीपति वर्ग और दीन-हीन वर्ग। निरालाजी ने अनेक कविताओं में आर्थिक व्यवस्था के चित्र हमें दिखाई देते हैं। निरालाजी ने आर्थिक व्यवस्था का वर्णन "भिक्षुक" कविता में महत्वपूर्ण और कडा व्यंग्य करके किया है। भिक्षुक की आर्थिक व्यवस्था का वर्णन निरालाजी ने इस प्रकार किया है, भिक्षुक भीख मांगने के लिए सडक पर खडा है। भिक्षुक सडक पर पडे जूठे पत्तल चाट रहे हैं और उनके पास कुत्ते भी खडे हैं, जो जूठे पत्तल भिक्षुक के हाथ से झपट कर ले जाने के लिए तैयार हैं।[76] निरालाजी ने अपनी खुद की आर्थिक व्यवस्था का वर्णन "सरोज स्मृति" कविता में किया है। निरालाजी कहते हैं कि, मैं एक धनहीन पिता हूँ, तेरा हित नहीं कर सका क्योंकि आर्थिक साधन जुटाने में असमर्थ था और मैं सदा ही आर्थिक पथ पर हारता रहा और मैं निराश होता गया।[77]

निरालाजी ने पूँजीवादी व्यवस्था के प्रति क्रांति लाने का प्रयत्न किया है। निरालाजी मानते हैं कि आर्थिक क्रांति से ही समाज में समानता आयेगी। निरालाजी बादल के माध्यम से कहते हैं, धनी व्यक्ति भी बादल की गर्जना से आँखें मूँद पडें हैं और जीर्ण बाहु और शीर्ण शरीरवाले किसान अधीर होकर तुम्हें बुलाते हैं।[78]

निरालाजी समाज मे होने वाले अत्याचार, आर्थिक संकट इन्हें देखकर कहते हैं, यह संसार दुःख पूर्ण है। यह राज्य भी दुःख का राज्य माना जाता है। इस राज्य में उत्पीडा ज्यादा दिखाई देती है।[79] धनिक वर्ग दोनों का शोषण करता है और समाज को दुःखी बनाता है।

निरालाजी ने सामाजिक जीवन में नारी को भी महत्वपूर्ण माना है। नारी का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। निरालाजी ने नारी को आदर्श भारतीय नारी के रूप में चित्रित किया है। मनुष्य के जीवन को परिवर्तनशील बनाने का काम नारी करती है। "तुलसीदास" कविता में तुलसीदास की पत्नी रत्नावली की फटकार सुनकर तुलसीदास अध्यात्म मार्ग में लगे। भारतीय समाज में नारी(पत्नी) का आदेश महत्वपूर्ण माना जाता है।

निरालाजी ने नारी को प्रेयसी युवती के रूप में चित्रित किया है। प्रेयसी अपने प्रिय की याद करते हुए नेत्र से लगातार आँसू बहाती रहती है।[80] निरालाजी ने नारी का चित्रण विधवा के रूप में भी किया है। भारतीय समाज में विधवा नारी का जीवन बडा दु:खदायी है। भारतीय समाज में विधवा नारी का जो स्थान है उसपर निरालाजी ने कडा व्यंग्य भी किया है।निरालाजी कहते हैं, भारतीय विधवा नारी का जीवन वृक्ष के टूट जाने पर उस पर फैली लता जो असहाय दिखाई देती है उसी तरह भारतीय दलित विधवा नारी का जीवन है।[81]

4·4·4 सामाजिक शिष्टाचार एवं आदर्श व्यवहार :-

भारतीय समाज में बडों का आदर, देवताओं की पूजा-अर्चना आदि शिष्टाचार महत्वपूर्ण रूप से माने जाते हैं। मानव को शिष्टाचार बाह्य जीवन के विकास का बोध करता है। निरालाजी की अनेक कविता में भारतीय शिष्टाचार के दर्शन होते हैं।

(क) प्रात:कालीन सूर्य की प्रार्थना -

निरालाजी ने अपनी "अर्चना" कविता में प्रात:कालीन सूर्य की प्रार्थना की है, हे सूर्य, तुम अंधकार को नष्ट करने वाले हो, तुम हमें अपना दर्शन दो और इस अंधकार में पडे संसार को अपने किरणों से सजग कर दो।[82] कवि आगे कहते हैं, भारत में चारो दिशाओं में अब ज्ञान फैल गया है क्योंकि पूर्व दिशा में अब सूर्य निकल चूका है जो अपने नवीन रथ में बैठकर भारत में आया है।[83]

(ख) संध्याकालीन प्रार्थना -

भारत में संध्या के समय इष्ट देवों की स्तुति में भजन गाये जाते हैं। निरालाजी ने भी "राम की शक्ति पूजा" में ईश वन्दना करने का प्रसंग चित्रित किया है। राम की कुटिया में संध्या के समय में सभी वानर चले गये हैं और सभी वानर संध्याकालीन ईश्वरोपासना करने के लिए तालाब पर गये हैं।[84]

(ग) चरण स्पर्श करना -

माता-पिता, गुरू तथा अन्य श्रध्देय व्यक्तियों के चरण-स्पर्श करके अपनी भक्ति भावना व्यक्त की जाती है। महाराजा शिवाजी भी राजा जयसिंह के चरणों पर अपने नयन झुका देना चाहते हैं और उनके सुख के लिए अपना सीर भी झुका देना चाहते हैं और उनकी सेवा करना चाहते हैं।[85] हनुमान भी श्रीराम के कोमल चरणों के दर्शन करते हुए सोचते हैं, उनके चरण सृजन और संहार या ब्रह्म हैं। आगे कहते हैं, ये चरण निर्दोष गुणों के समूह हैं, और साधना करते समय उपासक इन्हीं चरणों का ध्यान करते है।[86]

(घ) गोद में बिठाना -

संसार में छोटे बच्चों को स्नेह से लोग गोद में बिठाते हैं। निरालाजी अपनी पुत्री सरोज से कहते हैं, तुम अपनी नानी की स्नेह गोद में बैठ गई और तुझे मामा-मामी का अपार प्रेम प्राप्त हुआ।[87]

(ङ) यथास्थान बैठना -

समाज में चारपाई पर बैठना भी एक शिष्टाचार है। निरालाजी ने "राम की शक्ति पूजा" कविता में श्रीराम का यथा स्थान बैठना महत्वपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। श्रीराम को सब घेर कर बैठे थे और उनकी आज्ञा का इंतजार कर रहे हैं। श्रीराम के पीछे लक्ष्मण थे, सामने बिभीषण और जाम्बवान एवं सुग्रीव थे और श्रीराम के चरणों के पास हनुमान बैठे थे।[88]

(च) नमस्कार और आशीर्वाद -

समाज में आयु में बडे लोगों को नमस्कार किया जाता है तथा आयु में छोटे लोगों को आशीर्वाद दिया जाता है। "छत्रपति शिवाजी का पत्र" कविता में महाराजा शिवाजी राजा जयसिंह को नमस्कार और आशीर्वाद देते हैं।[89]

इस प्रकार निरालाजी ने अपनी अनेक कविताओं में मानव का व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन चित्रित किया है।

4·5 आध्यात्मिकता :-

अध्यात्म भावना भारतीय संस्कृति के कण-कण में व्याप्त हैं। प्रत्येक भारतीय यह विश्वास करता है कि हमारे उत्कृष्ठ एवं निकृष्टतम कर्म में सफलता देने वाला परमात्मा ही है। इसीलिए लेखक और कवि अपने अनेक ग्रंथ की रचना करते समय प्रारंभ में मंगलाचरण अवश्य करते हैं। निरालाजी ने भी "अपरा" में पहला गीत भारत माता को वन्दन करते हुए प्रस्तुत किया है। प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता अनिवार्य मानी गयी है।

निरालाजी के काव्य में भी हमें आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं। निरालाजी की आध्यात्मिकता छायावाद पर आधारित है। स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी ब्रह्मानंद, स्वामी प्रेमानन्द आदि के विचारों का प्रभाव निरालाजी के अध्यात्मिक साधना पर था। निरालाजी का व्यक्तित्व जहाँ एक ओर कवि का संवेदनशील व्यक्तित्व है, वहाँ दूसरी ओर संत अथवा आध्यात्मसाधक का।

निरालाजी "तुलसीदास" और "राम की शक्तिपूजा" कविता में तुलसी और राम के द्वारा आध्यात्मिकता का वर्णन करते हैं। इन दोनों कविताओं में संयोग शृंगार के माध्यम से अध्यात्मिक उपलब्धि को कला अत्यंत सफल रही हैं। निरालाजी कहते हैं, रूखी डाली का व्रत जो है उस पर वसंत ऋतु के आने से ही पूर्ण होगा और वह डाली सारे जग को अपनी ओर आकृष्ट कर लेगी। जैसे आत्मा और परमात्मा के मिलन से सारे जग को अपनी ओर आकृष्ट किया जाता है।[90]

निरालाजी आज के युग में भी आध्यात्मिकता को सुरक्षित रखना चाहते हैं। निरालाजी "बादल"कविता में कहते हैं, तुम्हें सुनाने के लिए कभी मैंने कम गीत गाये हैं ओर मैं आज भी तुम्हारे प्रति अपनी भावना गीतों के रूप में प्रकट करता हूँ।[91] निरालाजी का अध्यात्म और चिन्तन के क्षेत्र में ही नहीं संस्कृति, धर्म, सौन्दर्य चेतना, शिल्प के क्षेत्र में भी साहस देखा जाता है। करूणा, प्रेम, प्रकृति, राष्ट्रभक्ति सभी निरालाजी के काव्य में अध्यात्मक में रंगे हैं।

निरालाजी वन बेला के माध्यम से आत्मनिरीक्षण और आत्म-मूल्यांकन करने कहते हैं। निरालाजी मानते हैं कि, वन बेला आत्मिक मूल्यों के लिए जीती है, और कवि भी आत्मिक मूल्यों के लिए जीता है। निरालाजी की अध्यात्मिकता रहस्यवाद पर आधारित है।

निरालाजी ने भक्ति का चित्रण "देवी सरस्वती" कविता में सुंदर ढंग से किया है। कवि कहते हैं, लोग अपनी-अपनी खेती के पास गोलकर बैठ जाते है, पूर्ण भक्ति से कबीर और तुलसी के भजन गाते हैं। तो कभी लोग पूर्ण भक्ति भाव से राम के धुनष्य का वर्णन करते हैं तो कभी राम के वनवास जाने के भजन गाते हैं।[92]

निरालाजी भक्त कवि थे। सगुणोपासक भक्तों की तरह आपकी कविता में भी भक्ति के सभी अंगों के दर्शन होते हैं। निरालाजी ने कभी स्वयं के लिये ही नहीं सोचा, उन लोगों के लिये भी सोचा जो दलित और दीन थे। निरालाजी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि, हे भगवान तुम दलित जनों पर दया करो और गरीब, दु:खी लोगों का दु:ख दूर करने के लिए तुम अपनी रक्षक शक्ति तैयार रखो।[93]

आध्यात्मिक अनुभव का सजीव चित्र हमें निरालाजी के काव्य में मिलता हैं। ज्ञान आनंदनीय बन कर हमें आत्मविभोर कर देता हैं और जगत से हट कर हम ब्रहम में केन्द्रित हो जाते हैं। कवि कहते हैं, मेरी पलके जो रात्रि के अन्धकार में निद्रावश थी वह अब खुल गयी हैं, अब ज्ञान का प्रकाश पाकर प्रफुल्ल होकर मुस्करा रही हैं।[94]

निरालाजी सांस्कृतिक परंपरा अध्यात्म को केन्द्र में रखकर और ब्रहमदृष्टि से जगत को देखते हैं। इस प्रकार निरालाजी के काव्य में आध्यात्मिकता का अध्ययन किया जा सकता है।

4·6 दार्शनिकता :-

दर्शन का साधारण अर्थ हैं - देखना। दर्शन का भारतीय विचारधारा एवं संस्कृति में अत्यन्त उच्च स्थान है। वस्तुतः तत्वार्थ संबोध को ही ज्ञान कहते हैं तथा युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयत्न को ही हम दर्शन कहते हैं।[95] आत्मा, परमात्मा,, जन्म-मरण, सुख-दुःख इस प्रपंच से मुक्ति इन सबका स्वरूप दर्शन में आता हैं।

किसी कवि पर जिन-जिन दार्शनिक मतों का प्रभाव पडता हैं, वे सब किसी-न-किसी रूप में उसके काव्य में चरितार्थ होते हैं। निरालाजी के काव्यपर भी अनेक दार्शनिक मतों का प्रभाव पडा है। निरालाजी के दर्शन पर स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। निरालाजी ने "रामकृष्ण मिशन" के "समन्वय" के सम्पादन काल में वेदान्त-दर्शन और स्वामी विवेकानन्द के साहित्य का गहन अध्ययन किया था। निरालाजी मूलतः वेदान्तीय अद्वैतवादी विचारधारा में विश्वास करते हैं। निरालाजी विवेकानन्द के वेदान्त से प्रभावित होकर आप मानवतावाद की ओर आकृष्ट हो गये थे। निरालाजी ने स्वयं स्वीकार किया है कि उन्हें कवि का हृदय और दार्शनिक का मस्तिष्क मिला है। वस्तुतः निरालाजी का दार्शनिक काव्य अलग कोटी का नहीं है क्योंकि आपका समस्त काव्य ही दार्शनिक काव्य है। निरालाजी के काव्य चेतना पर दर्शन पूर्णतः छाया हुआ है।

निरालाजी के दर्शन में निम्नलिखित बातें मिलती है -

4·6·1 ब्रह्म :-

निरालाजी ब्रह्म को सर्व व्यापक और सर्व शक्तिमान मानते हैं। समस्त विश्व ब्रह्म में ही समाहित है। निरालाजी ने मानव को भी ब्रहम के रूप में चित्रित किया हैं। निरालाजी कहते हैं, हे मानव तुम सदा ही महान हो और सदा ही महान रहोगे। अतः तुम्हारे मन में जो कायरता और सांसारिक विषयों के प्रति जो आसक्ति हैं वह तुम्हारी नश्वरता का कारण है। हे मानव, तुम ब्रह्म हो और तुम्हारे चरणों के सामने यह विश्व भार धूल के समान भी नहीं हैं।[96]

निरालाजी ब्रह्म को सामाजिक क्रांति से जोडना चाहते हैं। निरालाजी ने "आवाहन"कविता में देवी की शक्ति को आवाहन किया है। निरालाजी ने देवी के माध्यम से ब्रह्म से प्रार्थना की है कि वह इस संसार के दु:ख दूर करने के लिए आये और अपने नाच से संसार के सभी दु:ख दूर करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन करें। राम ने भी शक्ति-देवी की पूजा कर अपने लिए विजय का वरदान प्राप्त किया था।

निरालाजी के काव्य में जगत और जीवन ब्रह्म में लयमान है। निरालाजी की पुस्तकों में जहाँ भी इस ब्रह्म की झलक मिलती है, उसके आगे-पीछे अन्धकार और दु:ख से भरी हुई कविताएँ भी हैं। निरालाजी ने अपनी अनेक कविताओं में ब्रह्म का वर्णन अनेक उपमाओं के माध्यम से चित्रित किया है।

4·6·2· <u>ब्रह्म और आत्मा :-</u>

निरालाजी ब्रह्म और आत्मा में भेद स्वीकार नहीं करते। आत्मा ब्रह्म का ही अंग है। निरालाजी की कविता "तुम और मैं" आत्मा और परमात्मा के संबंधों का सुंदर चित्र है। निरालाजी ने "तुम और मैं" कविता में जीवात्मा-परमात्मा के संबंध की काव्यात्मक अभिव्यक्ति की है। निरालाजी ने इस कविता में "तुम" ब्रह्म के लिए और "मैं" जीवात्मा के लिए प्रयुक्त किया है। निरालाजी ने ब्रह्म को शृंग हिमालाय, धन, दिनकर के किरण, योग, सच्चिदानंद ब्रह्म, ओंकार, शिव, राम, वसन्त, मदन आदि रूपों में देखा है और अपने को सुरसरिता, बिजली, कमल की मुस्कान, सिध्दि, मनोमोहिनी माया, प्रकृति, शक्ति, सीता, कोयल, मुग्धा आदि रूपों में प्रस्तुत किया है।[97]

निरालाजी ने "जुही की कली" कविता में भी आत्मा और परमात्मा के मिलन को प्रतीक बध्द किया है। ब्रह्म के मिलन के लिए जब आत्मा विरह में उठती है तब वह सारे समाज के बंधन तोडकर ब्रह्म के मिलन के लिए जाती है। निरालाजी की "धारा" कविता में परमात्मा के मिलन के लिए आत्मा याने धारा सारे जग के बंधनों को ढीले कर अपने प्राण मुक्त कर और संसार का करूण-

क्रन्दन रूकवाकर वह परमात्मा से मिलने जा रही है।[98] कवि आगे कहते हैं, इस बहती हुई धारा को कोई पूँछता है तुम इस तरह कहाँ जा रही हो? तभी धारा कहती हैं, मैं नवजीवन के प्रबल उमंगों के संग, अपने प्रियतमा से मिलने जा रही हूँ और मैंने संसार की सारी सीमाएँ पार की हैं।[99]

जब आत्मा-परमात्मा से मिलने जाती है तब परमात्मा द्वार बंद कर बैठे हैं। आत्मा परमात्मा से दार खोलने के लिए प्रार्थना करती हैं, हे परमात्मा तुम्हारे मिलन के लिए मैं अंधकार में खडी हूँ, हे मेरे प्रियतम सूर्य ! तुम अब उदित होकर अपना हाथ बढाओं ओर कमलिनी को स्पर्श कर उसे प्रसन्न करो और प्रियतम अपना द्वार खोलो।[100]

आत्मा प्रियतम ब्रहम में इतनी तल्लीन हो जाती हैं कि, आत्मा प्रेयसी के माध्यम से कहती हैं, तुम्हारे मिलन से मेरी दृष्टि में मेरा जो संसार था वह दूर हो गया हैं। तुम्हारी ज्योति छवि से मेरी ज्योति छवि मिल गयी हैं और मैं तुमसे इस तरह मिल गई हूँ, जिस प्रकार आकाश में नीलिमा मिल जाती हैं।[101] निरालाजी की "प्रेयसी" कविता में आत्मा-परमात्मा का दिव्य शृंगार है।

4·6·3 माया :-

स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन का प्रभाव निरालाजी पर अधिक देखा जा सकता हैं। स्वामी विवेकानन्द भ्रम को ही माया समझते थे। व्यष्टि और समाष्टि में जहाँ भेद दिखाई देता हैं, उसका कारण भ्रम हैं और इस भ्रम का ही नाम माया है। माया और ब्रहम का परस्पर संबंध महत्वपूर्ण है। निरालाजी ने माया का वर्णन अनेक कविताओं में किया है। "राम की शक्ति पूजा" में राम का मन माया वरण पार कर जाता है फिर भी वह शक्ति की पूजा करते हैं और अन्त में शक्ति उनमें समा जाती है।

निरालाजी "स्मृति" कविता में माया का वर्णन करते हुए कहते हैं, तुम संसारिक जीवन में भ्रमित जीवों को बाँधकर माया दिन रात उनके पास चक्कर काटती

रहती है।[102] निरालाजी इस संसार का वर्णन माया में करते हैं। कवि कहते हैं, यह संसार माया है।इन सब में माया है और माया ही संसार है।[103] निरालाजी ने खुद को भी माया कहा है। कवि कहते हैं, हे ब्रहम तुम सच्चिदानन्द के रूप हो और मैं सबके मन को मोहित करनेवाली ब्रहम की माया हूँ।[104]

निरालाजी यमुना को भी माया के रूप में देखते हैं। कवि यमुना से पूछते हैं, तुझे अपने यौवन कालीन मोहन को सम्मोहित करने का ध्यान आ गया है जो माया की भाँति सबको मोहित कर गया है।[105] निरालाजी दुर्गा देवी से कहते हैं, हे देवी काली, तू ही इस संसार की सुख वनमाली है और तेरे ही माया की छाया में यह संसार है। और निरालाजी देवी काली से इस शरीर से माया का नाश करने के लिए भी प्रार्थना करते हैं।[106] निरालाजी कहते हैं,, एक ओर देवी सरस्वती है और दूसरी ओर भौतिक आवश्यकता परंतु जिधर ईश्वर है उसी ओर विजय हो जायेगी और दूसरी ओर माया का हाथ है वह हार जायेगी।[107] इस तरह निरालाजी ने माया का वर्णन किया है।

4·6·4 संसार :-

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार निरालाजी मानते हैं ब्रहम से ही जगत का निर्माण होता है। निरालाजी संसार को नश्वर और ब्रहम को अनश्वर कहते हैं। यह संसार मानव को माया में डालता है और ब्रहम मानव को माया से निकालता है। निरालाजी कहते हैं, यह संसार सुख-दुःख का समन्वय है। कवि कहता है, संसार का चक्र हमेशा घूमता रहता है और इस अचलता में ही चंचल प्राण रहते हैं तथा मानव का जीवन अहंकार में झंकृत हो रहा है और उसका लगातार पतन हो रहा है।[108]

निरालाजी इस संसार के दुःख, उत्पीडन, शोषण, अन्याय को देखकर भडक उठते हैं। संसार में दीन लोगों पर कितना अत्याचार होता है यह निरालाजी स्पष्ट करते हुए कहते हैं, इस संसार में निरंतर घात-प्रतिघात हमेशा होते रहते हैं और इतना दुःख संसार के दिन-रात में चलता रहता है।[109] निरालाजी

संसार का दुःख दूर करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि, अब इस संसार.. में नहीं रहेंगे। क्योंकि इस संसार में जहाँ देखो कोलाहल और हाहाकार मचा हैं। अब हमें सिर्फ तुम्हारा सहारा है और तुम ही हमें संसार के इस दुःख से मुक्ति दिलाओगे। हम अब संसार के इस दुःख से दुर्बल हो गये हैं अब तुम ही ऐसा कोई प्रहार करो जिससे हमें मुक्ति मिल जाये।[110]

निरालाजी कहते हैं, इस संसार में ही सुख है और दुःख भी है। तथा संसार में अमृत में ही विष हैं।[111] निरालाजी ने माना है कि मानव का आधार संसार ही होता है।

4·7 मानवता :-

प्राचीन युग से मानवता की भावना भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। मानवता धर्म ही निरालाजी का सहज धर्म रहा है। निरालाजी का समस्त काव्य साहित्य ही मानवता के दर्शन कराता हैं। निरालाजी के साहित्य में जनकल्याण की भावना हमेशा दिखाई देती है और पूंजीपति और शोषक इनके प्रति निरालाजी का कडा विरोध प्रदर्शित होता है। निरालाजी मानव-मानव में समानता देखते हैं। निरालाजी मानव को ब्रह्म के रूप में देखते हैं। निरालाजी मानव से कहते हैं, तुम महान हो और सदा ही तुम महान रहोंगे।

निरालाजी मानव को स्वतंत्र करने के लिए शत्रु से लडने को कहते हैं। महाराजा शिवाजी राजा जयसिंह से कहते हैं, तुम अपने देशवासियों का अगर प्रेम पाना चाहते हो तो शत्रु के खून से तुम भारत माँ का दाग धो डालो जिससे तुम देशवासियों के नजर में अमर कहलाओगे।[112]

निरालाजी ने इसे दिखाया है कि मानव का समाज में कितना अपमान होता है। निरालाजी ने मानव-मानव के भेद को अनेक कविताओं के माध्यम से स्पष्ट किया है। निरालाजी ने मानव-मानव का संबंध "भिक्षुक", "विधवा", "तोडती पत्थर", "दीन" आदि कविताओं में चित्रित किया है। इन कविताओं को पढकर

ऐसा मालूम होता है कि इस संसार में मानव का जीवन बहुत बुरा है। मानव के जीवन का कोई मूल्य नहीं है।

निरालाजी ने "भिक्षुक" कविता में भिक्षुक का वर्णन किया है। वह अत्यंत क्षीण है और दो टूक कलेजे के करता हुआ अपने दो पुत्रों को लेकर पथ पर आकर पछताता है। भिक्षुक की पीठ और पेट दोनों एक हो गए हैं जिससे वह लाठी टेककर चल रहा है। भिक्षुक मुठ्ठीभर दाने के लिए अपनी फटी झोली फैलाकर पथ पर चलकर अपनी भूख मिटाने के लिए भिख माँग रहा है।[113]

निरालाजी ने मानव के इस समाज में नारी का भी चित्रण किया है। भारतीय समाज में विधवा का स्थान कितना गौण है इसे "विधवा" कविता में चित्रित किया है। निरालाजी कहते हैं, विधवा उस लता के समान है जिसका आधार पेड टूट गया है और दीन बनी है।[114]

निरालाजी ने मानव-मानव के भेदभाव का भी वर्णन किया है। निरालाजी कहते हैं, आज का मानव अपने सुखी जीवन के लिए अपने ही भाईयों का खून करते हैं और आपस में लडते रहते हैं।[115] निरालाजी देश की उन्नति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले सत्ताधारियों पर, नेताओं, धर्म के ठेकेदारों पर कडा व्यंग्य करते हैं। निरालाजी कहते हैं कि समाज में मानव का स्थान जानवरों से भी निम्न है, क्योंकि एक ब्राह्मण के पास वानरों को खिलाने के लिए पुए हैं परंतु एक भिक्षुक को देने के लिए पुए नहीं।[116] यहाँ निरालाजी ने समाज में मानव-मानव द्वारा कितना अपमानित होता है इस बात पर तीखा व्यंग्य किया है।

निरालाजी समाज पर कडा व्यंग्य भी करते हैं परंतु निरालाजी समाज को सुखी भी देखना चाहते हैं। निरालाजी मानव की समृध्दि के लिए प्रार्थना करते हैं। निरालाजी समस्त मानव जीवन को सुन्दर देखना चाहते हैं। निरालाजी चाहते हैं कि भारत में मानव-मानव में एकता निर्माण हो जाय। निरालाजी कहते हैं,

मृत्यु का कौनसा रूप होगा यह मालूम नहीं परंतु भारत में जो नीचता फैली है वह बुरी है और अगर भारत में एकीभूत शक्तियाँ आपस में मिला जाय तो एक परिवार बन जायेगा।[117]

निरालाजी का मानवतावाद मानव-मानव की समता, दलितों-पीडितों के प्रति करूणा और अत्याचारी पाखण्डी के प्रति क्रोध, घृणा, व्यंग्य है। निरालाजी ने विश्व मानवता की भावना को भी व्यापक बनाया है।

निरालाजी ने सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन अनेक कविताओं में अनेक प्रकारों से किया है। जिससे निरालाजी की सांस्कृतिक चेतना महत्वपूर्ण मानी जाती है। निरालाजी ने भारतीय संस्कृति के अनेक पहलूओं का अपने ढंग से अध्ययन किया है। निरालाजी के साहित्य में इतिहास, संस्कृति, धर्म और दर्शन सभी क्षेत्रों को हमने सनातन सांस्कृतिक भारत को पाने का प्रयत्न किया है। इसलिए डॉ·रामरतन भटनागरजी कहते हैं कि, निरालाजी युग-संस्कृति के साथ भारत के श्रेष्ठतम सांस्कृतिक युगों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।[118] निरालाजी के काव्य में हमें सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन जितना हुआ है उतना किसी अन्य कवि के अध्ययन में नहीं। इसलिए निरालाजी को नवजागरण का प्रतिनिधि कवि और इस युग का सबसे बडा सांस्कृतिक कवि कह सकते हैं।[119]

निरालाजी का काव्य भारतीय संस्कृति परंपरा के भीतर से आया है। यह सांस्कृतिक परंपरा अध्यात्म को केन्द्र में रखती हैं और ब्रह्मदृष्टि से जगत को देखती है। इसलिए निरालाजी ने नव-जागरण युग की संस्कृति को अपनी रचनाओंमें संस्कार निष्ठ बनाने का प्रयत्न किया है। डॉ·रामरतन भटनागरजी कहते हैं, आप स्वयं भारतीय संस्कृति के पौरूष, कारूण्य, साहस और सात्विकता के प्रतीक बन गये हैं। आप निश्चय ही मनीषी कवि हैं।[120] हम कह सकते हैं कि निरालाजी सांस्कृतिक परंपरा के कवि हैं और आपने भारत वर्ष की सहस्त्रों वर्षो की सांस्कृतिक प्रेरणा ग्रहण की है। यह प्रेरणा हमें आपकी अनेक कविताओं में दिखाई देती है।

संदर्भ :-

1· अनु· बाबूराव जोशी - भारतीय संस्कृति - पृ· 31

2· महेन्द्रकुमार वर्मा - भारतीय संस्कृति के मूलाधार - पृ·153

3· धनञ्जय वर्मा - निराला काव्य पुर्नमूल्यांकन - पृ· 43

4· बुध्दसेन निहार - विश्व कवि निराला - पृ· 214

5· निराला - अपरा - दान - पृ· 131

6· वही - देवी सरस्वती - पृ· 166

7· वही - पृ· 165

8· वही - पृ· 167

9· वही - स्नेह निर्झर बह गया है - पृ· 144

10· वही - देवी सरस्वती - पृ· 167

11· वही - नाचे उस पर श्यामा - पृ· 134

12· वही - देवी सरस्वती - पृ· 164

13· वही - भिक्षुक - पृ· 66

14· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 79

15· वही - सरोज स्मृति - पृ· 153

16· वही - यमुना के प्रति - पृ· 103

17· वही - सन्ध्या सुन्दरी - पृ· 19

18· वही - वसन्त आया - पृ· 23

19· वही - भारती वन्दना - पृ· 9

20· वही - यमुना के प्रति - पृ· 100

21· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 77-78

22· वही - स्वागत - पृ· 36

23· वही - तोडती पत्थर - पृ· 26

24· वही - बादल राग - पृ·· 11

25· वही - रवि गये अपर पार - पृ· 40

26· वही - भारती वन्दना - पृ· 9

27· वही - यमुना के प्रति - पृ· 93

28· वही - पृ· 96

29· वही - तुम और मैं - पृ· 67

30· वही - पृ· 68

31· वही - भारती वन्दना - पृ· 9

32· वही - नुपूर के सुर मन्द रहे - पृ· 39

33· वही - देवी सरस्वती - पृ· 165

34· वही - पृ· 164

35· वही - पृ· 167

36· वही - आवाहन - पृ· 118

37· वही - आवेदन - पृ· 69

38· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 80

39· वही - राम की शक्ति पूजा - पृ· 48

40· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 83

41· वही - पृ· 85

42· वही - नाचे उस पर श्यामा - पृ· 135

43· वही - यमुना के प्रति - पृ· 92

44· वही - पृ· 93

45· वही - पृ· 100

46· वही - पृ· 106

47· वही - खण्डहर के प्रति - पृ· 131

48· वही - पृ· 132

49· वही -सहस्त्राब्दि - पृ· 175

50· वही - पृ· 178

51· वही - देवी सरस्वती - पृ· 163

52· वही - पृ· 163

53· वही - पृ· 168

54· वही - भगवान बुध्द के प्रति - पृ· 159

55· वही - पृ· 160

56· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 91

57· वही - पृ· 90

58· वही - भगवान बुध्द के प्रति - पृ· 159

59· वही - पृ· 159

60· वही - जागो फिर एक बार-2-पृ· 17

61· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 81

62· वही - तुलसीदास - पृ· 172

63· धनञ्जय वर्मा - निराला काव्य पुर्नमुल्यांकन - पृ· 56

64· निराला - अपरा - दान - पृ· 131

65· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 90

66· वही - दीन - पृ· 114

67· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 88

68· वही - पृ· 88

69· वही - पृ· 89

70· वही - नाचे उस पर श्यामा - पृ· 139

71· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 90

72· वही - सहस्त्राब्दि - पृ· 178

73· वही - सरोज स्मृति - पृ· 153

74· वही - हिंदी के सुमनों के प्रति पत्र - पृ· 32

75· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 90

76· वही - भिक्षुक - पृ· 66

77· वही - सरोज स्मृती - पृ· 146

78· वही - बादल राग - पृ· 11

79· वही - दीन - पृ· 114

80· वही - स्मरण करो - पृ· 71

81· वही - विधवा - पृ· 55

82· वही - अर्चना - पृ· 179

83· वही - जागा दिशा - ज्ञान - पृ· 29

84· वही - राम की शक्ति पूजा - पृ· 43

85· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 78

86· वही - राम की शक्ति पूजा - पृ· 44

87· वही - सरोज स्मृति - पृ· 156

88· वही - राम की शक्ति पूजा - पृ· 43

89· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 76

90· वही - वसन्त वासन्ती लेगी - पृ· 59

91· वही - बादल - पृ· 41

92· वही - देवी सरस्वती - पृ· 165

93· वही - दलित जन पर करो करूणा - पृ· 158

94· वही - जागा दिशा ज्ञान - पृ· 29

95· महेन्द्रकुमार वर्मा - भारतीय संस्कृति के मूलाधार - पृ· 179

96· निराला - अपरा - जागो फिर एक बार - 2 पृ· 18

97· वही - तुम ओर मैं - पृ· 67

98· वही - धारा - पृ· 116

99· वही - पृ· 117

100· वही - अंजलि - पृ· 113

101· वही - प्रेयसी - पृ· 124

102· वही - स्मृति - पृ· 110

103· वही - जागो फिर एक बार 2 ·· पृ· 17

104· वही - तुम और मैं - पृ· 67

105· वही - यमुना के प्रति - पृ· 91

106· वही - नाचे उस पर श्यामा - पृ· 137-38

107· वही - तुलसीदास - पृ· 172

108· वही - स्मृति - पृ· 110

109· वही - दीन - पृ· 115

110· वही - स्वप्न स्मृति - पृ· 119

111· वही - नाचे उस पर श्यामा - पृ· 137

112· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 83

113· वही - भिक्षुक - पृ· 66

114· वही - विधवा -पृ· 55

115· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 79

116· वही - दान - पृ· 131

117· वही - छत्रपति शिवाजी का पत्र - पृ· 90

118· डॉ·रामरतन भटनागर - निराला नवमूल्यांकन - पृ· 227

119· वही - पृ· 205

120· वही - पृ· 37